International Journal of Multidisciplinary Research and Development

International Journal of Multidisciplinary Research and Development

Volume: 2, Issue: 5, 559-562
May 2015
www.allsubjectjournal.com
e-ISSN: 2349-4182
p-ISSN: 2349-5979
Impact Factor: 4.342

स्मिता पटवा
(वाणिज्य) सहायक प्राध्यापिका
श्री जैन श्वेताम्बर प्रोफेशनल एकेडमी, इन्दौर, मध्य प्रदेश, भारत

Correspondence
स्मिता पटवा
(वाणिज्य) सहायक प्राध्यापिका
श्री जैन श्वेताम्बर प्रोफेशनल एकेडमी, इन्दौर, मध्य प्रदेश, भारत

मध्यप्रदेश के प्रमुख पर्यटन स्थलों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

स्मिता पटवा

प्रस्तावना
भारत की ह्रदयस्थली कहलाने वाला मध्यप्रदेश अपने उत्कृष्ट मंदिरों, किलो ओर वन्यजीवन की सौन्दर्यता में बसता है। राज्य का अधिकांश हिस्सा पठार पर ही है, इतिहास में जिसे मालवा के नाम से जाना जाता है। मध्यप्रदेश के कुछ प्रमुख पर्यटन स्थलों की सूची में भोपाल, अमरकंटक, बांधवगढ़, भेड़ाघाट, ओंकारेश्वर, पचमढ़ी, कान्हा, खजुराहों, भोजपुर, मांडव, अलीराजपुर, अशोक नगर, बालाघाट, बड़वानी, बैतुल, भीमबैठका, भिण्ड, चंदेरी, छतरपुर, छिंदवाड़ा, चित्रकुट, दमोह, दतिया, देवास, धार, ढिंढोरी, गुना, ग्वालियर, हरदा, होशंगाबाद, इटारसी, जबलपुर, झाबुआ, कटनी, खंडवा, खरगोन, महेश्वर, मैहर, मांडला, मंदसौर, मुरैना, नरसिंहपुर, नीमच, ओरछा, पन्ना, रायसेन, राजगढ़, रतलाम, रीवा, सागर, सांची, सतना, सिहोर, सिवनी, शहडोल, शाजापुर, शेओपुर, शिवपुरी, सिधी, सिंगरोली, टीकमगढ़, उदयगिरी, उज्जैन, उमरिया, विदिशा, इन्दौर आदि शामिल है। उक्त समस्त पर्यटन स्थलों में से कुछ विशेष महत्व रखने वाले पर्यटन स्थल जहा अधिकाधिक संख्या में पर्यटक प्रवास करते है, का वर्णन इस प्रकार है –

भोपाल
प्राकृतिक दृश्यों से भरपुर भोपाल मध्यप्रदेश की राजधानी है। 01 नवम्बर 1956 से भोपाल नये मध्यप्रदेश की राजधानी घोषित किया गया है। यह शहर भारत का ऐसा केन्द्र बिन्दु है जो अनूठे नैसर्गिकता एतिहासिकता और आधुनिक नगर नियोजन का एक नायाब नमूना है। यह सांची के बौद्ध स्तूपों तथा युनेस्कों द्वारा विश्वधरोहर भीमबैठका जाने का प्रवेश द्वार है। यह शहर समुद्र तल से 540 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है।

भोपाल के दर्शनीय स्थान
बिड़ला मंदिर, घोला मंदिर, खेड़ापति, श्रीराम मंदिर, (हमीदिया रोड़), श्रीजी मंदिर, लखेरापुरा, दुर्गा मंदिर, पीरगेट भवानी चौक, गुफा मंदिर, बालाजी मंदिर, ताजुल मस्जिद, भारत भवन, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय, आर्चालॉजिकल म्यूजियम, वन विहार, मछलीघर आदि।

भोपाल के आसपास के दर्शनीय स्थल
इस्लामनगर, भीमबेटका, भोजपुर, रायसेन का दुर्ग।

विदिशा
विदिशा बेतवा तथा बेस नदी के किनारे बसा हुआ हैं। पाली भाषा में इसे बेसनगर भी कहा जाता है। प्राचीन समय में यह पश्चिमी उपनिवेश की समृद्ध राजधानी हुआ करती थी। तत्कालीन समय की प्राचीन कलात्मक वस्तुएं पुराने समय के वास्तु शिल्प पर रोशनी डालती है तथा प्रतीत होता है कि प्राचीन समय की शिल्प कला भी विकसित थी। नदी किनारें बसा हुआ यह शहर सांची से 10 किमी. दूर है।

विदिशा के दर्शनीय स्थान
खम्भा बाबा, उदयगिरी की गुफाएँ, उदयपुर का नीलकंठेश्वर मंदिर, बीजा मंडल।

संची
भोपाल के निकट बौद्ध स्तूपों के लिए प्रसिद्ध सांची एक एतिहासिक पर्यटन स्थल हैं। यह भोपाल से 46 किमी. विदिशा से 10 किमी. तथा इन्दौर से 232 किमी. दूर है। यहां पर्यटकों के ठहरने के लिए राज्य पर्यटन विकास निगम का ट्रेवलर्स लॉज हैं भोजन के लिए निगम का ही उपहार ग्रह (कैफेटेरिया) भी है। सांची एक ऐसा पर्यटन स्थल है, जहां एक ही स्थान पर बौद्ध स्थापत्य कला के सभी रूपों, स्तूप, चैत्य, मठ (संघाराम या विहार) तथा मंदिरों के उदाहरण देखे जा सकते है व जो देश में बौद्ध रचनात्मक कला और मूर्तिकला का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है।

सांची के दर्शनीय स्थान
त्रिशाला स्तूप क्रमांक एक, चार तोरण द्वार, स्तूप क्रमांक दो, स्तूप क्रमांक तीन, स्तूप क्रमांक 17, अशोक स्तम्भ, महापात्र, संग्रहालय।

पचमढ़ी
पचमढ़ी सतपुड़ा की रानी है। अनगिनत प्राकृतिक दृश्यों से सरोकार पचमढ़ी मध्यप्रदेश का एकमात्र पहाड़ी ईलाका है। यह मध्यप्रदेश की एक खुबसुरत सैरगाह है। सतपुड़ा पर्वत श्रेणियों पर स्थित घने जंगलों से घिरी पचमढ़ी की गुफाएं, झरने व मंदिर सब इस क्षेत्र की रमणीयता में वृद्धि करते है। संक्षेप में पचमढ़ी मध्यप्रदेश में एक शीतल, मनमोहक, चित्राकर्षक और स्फुर्तिदायक तथा प्राकृतिक सौंदर्य से घिरा हुआ अत्यन्त सुंदर रमणीय स्थल है। कंदरायें, खहड़ व दर्रे तथा वनों के अन्दर गुजरती पगडंडिया इस नयनाभीराम क्षेत्र की विशेषताएं है।

पचमढ़ी के दर्शनीय स्थल
जटाशंकर, टायनम पूल (राज्यपाल सर), राजेन्द्र गिरी (पेनोरमा हिल), धूपगढ, महादेव, चौरागढ़।

इन्दौर
इन्दौर नगर केवल इमारतों, सड़कों तथा भीड़ का नाम नहीं है। संस्कृति के प्रवाह द्वारा छोड़े गये प्रतीक चिन्हों से भी नगर की यह पहचान बनती है। होलकर रियासत का केन्द्र रहा इन्दौर इन इतिहास चिन्हों पर गर्व करता है। राजबाड़ा महल इस शहर की पहचान से सीधा जुड़ा है। धार्मिक, शैक्षणिक, औद्योगिक चिकित्सकीय, वैज्ञानिक आदि सभी क्षेत्रों में इन्दौर अग्रणी रहा है। सामाजिक सेवा के क्षेत्र में भी इन्दौर की प्रसिद्धि दुर–दुर तक है।

इन्दौर शहर के दर्शनीय स्थल
गांधी हॉल, राजबाड़ा, लालबाग, श्री गणपति मंदिर जुनी इन्दौर, हरसिद्धि मंदिर, खजराना गणेश मंदिर, बड़ा गणपति मंदिर, बिजासन माता मंदिर, गोम्मटगिरी, हिंकारगिरी, चोरल आदि।

मांडू
मांडू इन्दौर से 98 कि.मी. और धार के दक्षिण में 35 कि.मी. दुर है। यह विन्ध्याचल पर्वत के एक ऊँचे पठार पर दो हजार फुट की ऊँचाई पर प्राकृतिक दृश्यों से भरपूर मूलतः मालवा के परमार शासकों की राजधानी रहा है। मांडू का किला छः से आठ कि.मी. लंबा तथा पाँच से छः कि.मी. चौड़ा है और कुल 46 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैला हैं। मांडू वर्षा ऋतु में मोहक व मनोहर हो जाता है।

मांडू के दर्शनीय स्थल
होशंगशाह का मकबरा, जामी मस्जिद, जहाज महल, हिंडोला महल, रेवाकुंड, बाजबहादुर महल, रूपमती मंडप, नीलकंठ महादेव आदि।

धार
यह मांडू का प्रवेश द्वार है जो इन्दौर से 60 कि.मी. दूर है तथा इन्दौर अहमदाबाद राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित है। यह परमार राजाओं की राजधानी रहा है।

धार के दर्शनीय स्थल
भोजशाला, फड़के स्टुडियो–मूर्ति संग्रहालय, बाग की गुफायें, नित्यानंद आश्रम एवं कालिका माता आदि।

महेश्वर
यह इन्दौर से 90 कि.मी. दूर नर्मदा के किनारे पर बसा है। यह बड़वाह से 39, खंडवा से 110, महू से 48, धार से 74 और धामनोद से 13 कि.मी. दूर है। प्राचीन काल में महेश्वर माहिष्मती के नाम से जाना जाता था। यह भारत के प्राचीनतम नगरों में से एक है, जिसका उल्लेख रामायण और महाभारत में भी आता है। देवी अहिल्याबाई एवं महेश्वर एक दुसरे के पर्याय है।

महेश्वर के दर्शनीय स्थल
राजबाड़ा, राजगद्दी, अहिल्याघाट, छत्री एवं अहिलेश्वर शिवलिंग, राजराजेश्वर मंदिर, बाणेश्वर महादेव मंदिर, बुनकर प्रशिक्षण केन्द्र आदि।

ओंकारेश्वर–मान्धाता
ओंकारेश्वर खंडवा से इन्दौर होते हुए अजमेर जाने वाली रेल्वे लाइन पर ओंकारेश्वर रोड़ स्टेशन से 12 कि.मी. दूर है। ऊँ आकार की पहाड़ी पर बना हुआ होने के कारण ही इसका ओंकारेश्वर नाम पड़ा। देश में बारह ज्योतिर्लिंगों में से केवल ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग ही नर्मदा के तट पर है।

मानपुर एवं जानापाव
इन्दौर से लगभग 50 कि.मी. दूर आगरा–मुम्बई राष्ट्रीय मार्ग पर बसा मानुपर एक प्राकृतिक सौंदर्य से भरा कस्बा है। मानपुर के समीप ही शीतलामाता की गुफायें जिसमें शीतलादेवी की प्रतिमा एवं शिवलिंग है। इसके समीप ही तेजारकुंड का मनमोहक झरना तथा आशापुरी माता का आकर्षक मंदिर भी प्राचीन है। जानापाव पहाड़ पर स्थित शंकर मंदिर अति प्राचीन है। यह भगवान परशुरामजी का जन्म स्थल है। चंबल नदी का उद्गम भी यहीं से होता है।

बुरहानपुर
मध्यप्रदेश का सीमावर्ती जिला बुरहानपुर इन्दौर से 180 कि.मी. दूर है, जो किसी जमाने में मुगलों की दूसरी राजधानी रहा है। कहते है मुगल सम्राट शाहजहाँ की प्रेमिका बेगम मुमताज महल की याद में एक भव्य मकबरा यहाँ भी मौजूद हैं। बुरहानपुर का किला और महल ईरानी स्थापत्य कला का श्रेष्ठ उदाहरण है। बुरहानुपर का रेणुका माता मंदिर और स्वामी नारायण मंदिर प्रसिद्ध है। दरगाह ए हकीमी बोहरा मुस्लिमों का प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है। यहाँ की जामा मस्जिद बड़ी पुरानी और देखने लायक है। यहाँ का जैन मंदिर ढाई सौ वर्ष पुराना है। बुरहानपुर का गुरूद्वारा अपनी भव्यता के लिए प्रसिद्ध है।

उज्जैन
उज्जैन एक महान धार्मिक केन्द्र के रूप में काशी, कांची और गया के बराबर है, भगवान महाकालेश्वर की महिमा से मंडित, क्षिप्रा के मनोरम तट पर अवस्थित उज्जैन मोक्षप्रदायिनी नगरी है। समस्त मृत्युलोक के स्वामी श्री महाकालेश्वर की वास भूमि होने के कारण इस तीर्थ पीठ का महत्व अन्य तीर्थों से भी अधिक है।

उज्जैन के दर्शनीय स्थल
महाकालेश्वर, हरसिद्धि, चिंतामन गणेश, भर्तृहरि की गुफा, कालिया देह महल, श्री सिद्धवट, कालभैरव, मंगलनाथ, सांदीपनी आश्रम, गढ़कालिका, गोपाल मंदिर आदि।

मंदसौर
शिवनाथनदी के किनारे बसा मंदसौर का प्राचीन नाम दशपुर है, जिसका वर्णन महाकवि कालिदास ने अपने महाकाव्य मेघदूत में किया है। यह पूरे भारत में अपनी अफीम की खेती के लिए मशहुर है।

मंदसौर के दर्शनीय स्थल
पशुपतिनाथ मंदिर, भादवा माता मंदिर, सुखानंद आदि।

ग्वालियर
ग्वालियर का प्राचीन इतिहास भव्य और गौरवशाली रहा हैं जो आठवीं शताब्दी तक जाता है। भारत की साहित्यिक सांस्कृतिक

और कलात्मक विरासत के संदर्भ में ऋषि गालव की तपोभूमि ग्वालियर का अपना महत्व है। यहाँ के संगीत, मूर्तिकला, चित्रकला का अपना एक खास स्थान है। ग्वालियर की शिल्पकला अपनी खुबसूरती और जीवन्तता के लिये मशहुर है।

ग्वालियर के दर्शनीय स्थल

ग्वालियर का किला, गुजरी महल, मानमंदिर पैलेस, तेली का मंदिर एवं सास बहू का मंदिर, तानसेन का मकबरा, झाँसी की रानी का स्मारक, जय विलास पैलेस एवं म्यूजियम, विवस्वान मंदिर, आनंदपुर सत्संग आश्रम आदि।

शिवपुरी

यह पूर्व समय सिंधिया रियासत की ग्रीष्मकालीन राजधानी रहा है। सिंधिया काल में शिवपुरी में सुंदर राज प्रासादों एवं शिकारगाहों का निर्माण हुआ।

शिवपुरी के दर्शनीय स्थल

माधव राष्ट्रीय उद्यान, छत्रियाँ, भदैया कुंड, पोहरी का जलमंदिर आदि।

दतिया

यह झाँसी से 25 कि.मी. और ग्वालियर से 75 कि.मी. दूर है। यहाँ का किला और महल दर्शनीय है।

दतिया के दर्शनीय स्थल

दतिया का महल, हनुमान मंदिर, पीतांबरा मठ आदि।

ओरछा

यह एक मध्ययुगीन नगर हैं जिसकी स्थापना सोलहवीं सदी में बुंदेला शासकों ने की थी। महलों, मंदिरों और किले का यह नगर बेतवा नदी के किनारे बसा है।

ओरछा के दर्शनीय स्थल

जहाँगीर महल, राजमहल, राय प्रवीणराय महल, चतुर्भुज मंदिर, लक्ष्मीनारायण मंदिर, रामराजा मंदिर आदि।

खजुराहों

खजुराहों मध्यप्रदेश के छतरपुर जिले का प्राचीन एवं एतिहासिक स्थान है जो अपने मंदिर के कलात्मक वैभव के कारण प्रसिद्ध है। कहते है एक समय यहाँ बहुत सारे खजूर के पेड़ हुआ करते थे, इसलिए इस गांव का नाम खजुराहों पड़ा। यूनेस्कों ने सन् 1990 में विश्व धरोहर (वर्ल्ड हेरिटेज) घोषित कर दिया।

खजुराहों के दर्शनीय स्थल

चौसठ योगिनी, कंदरिया महादेव मंदिर, चित्रगुप्त मंदिर, विश्वनाथ और नंदी मंदिर, जैन मंदिर और जैन संग्रहालय, लक्ष्मण मंदिर आदि।

पन्ना

सतना से 72 कि.मी. दूरी पर पन्ना है। यहाँ पन्ना में श्री प्राणनाथ मंदिर में यात्रियों के ठहरने के लिए अनेक कमरे बने हुए हैं। पन्ना अपने सुंदर मंदिरों के लिये प्रसिद्ध है।

पन्ना के दर्शनीय स्थल

श्री प्राणनाथ मंदिर, पन्ना वन्यप्राणी नेशनल पार्क, मझगवां एवं रमखिरिया हीरा खदान आदि।

चित्रकुट

मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश की सीमा पर मंदाकिनी नदी के तट पर स्थित चित्रकुट लोगों की धार्मिक आस्थाओं का प्रमुख केन्द्र है। यह वही स्थान है जहाँ चौदह वर्ष के वनवास के दौरान श्री राम, श्री लक्ष्मण और माता सीता ने अपना काफी समय बिताया था। पुरा चित्रकुट प्राकृतिक सुंदरता ओर अनेक झरनों से परिपूर्ण है।

चित्रकुट के दर्शनीय स्थल

रामघाट, कामदगिरि, प्रमोद वन एवं जानकी कुंड, स्फटिक शिला, अनुसूइया आश्रम, गुप्त गोदावरी, संकर्षण गिरी या हनुमान धारा, भरतकूप, बालाजी मंदिर आदि।

बांधवगढ़

यह राष्ट्रीय वन्य प्राणी उद्यान जबलपुर से 164 कि.मी. दूर है। पर्यटकों के ठहरने के लिए यहाँ श्वेत टायगर फारेस्ट लॉज और वन विभाग का डाक बंगला है। यह जुलाई से अक्टोबर की अवधि में बंद रहता है। यह उद्यान 448 वर्ग कि.मी. में फैला हुआ है। शहरी क्षेत्र से दुर होने से और पानी की प्रचुर उपलब्धता से यहाँ वन्य जीव टायगर के अलावा पेंथर, धब्बेदार हिरण, सांभर, जंगली सूअर, भोंकने वाले हिरण, तेंदुआ आदि बहुतायत में है। यहाँ विभिन्न प्रजातियों के दो सो से अधिक प्रकार के पक्षियों का भी बसेरा हैं। बांधवगढ़ किला दो हजार वर्ष पुराना है, यहाँ अनेक पोखर है जहाँ सारस, काली चीले, बाज, गिद्ध, फाख्ता, किंग फिशर तथा पेलिकन्स आदि को देखा जा सकता है। सरिसृपों में कोबरा, अजगर, कछुआ, मगर एवं छिपकलियाँ आदि यहाँ पाये जाते है।

अमरकंटक

अमरकंटक हिन्दुओं का एक महान तीर्थ स्थल है। यह नर्मदा और सोननदी का उद्गम स्थल है। यह मध्यप्रदेश का दुसरा हिल स्टेशन है जो घने साल वनों से घिरा है। दूर–दूर तक फैले हुए घने जंगलों के कारण यहाँ का मौसम शीतल एवं सुखद रहता है। नर्मदा का उद्गम स्थल होने के कारण अमरकंटक का अत्यधिक महत्व है।

अमरकंटक के दर्शनीय स्थल

पुष्कर जलाशय, माँ नर्मदा का उद्गम, पातालेश्वर–ज्वालेश्वर शिव मंदिर, नर्मदेश्वर और अमरकंटेश्वर के मंदिर, माँ की बगिया, सोनमुड़ा, कपिलधारा एवं दुधधारा आदि।

कान्हा राष्ट्रीय वन्य प्राणी उद्यान

यह एशिया का सर्वोत्तम वन्य प्राणी अभयारण्य है और विविध प्रजाति के वन्य जीवों का श्रेष्ठ स्थल है। यहाँ टायगर पेंथर, सांभर, चीतल, गौर, ब्लेकबक, भोंकने वाला हिरण बहुतायात में है। लुप्त हो रही प्रजाति बारहसिंगा का अंतिम शरण स्थल है। यहाँ पर्यटन का श्रेष्ठ मौसम नवंबर से जून है। जुलाई से अक्टोबर के मध्य यह बंद रहता है। यहाँ शेर को सुस्ताते, पानी में नहाते, शिकार करते, हिरणों को चौकड़ी भरते, लंगूरों को एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूदते, चीतल, श्यामवर्णी हिरण, बारहसिंगा, सांभर, काले सांभर तथा चीतल, जंगली सूअर, भेड़िया, लोमड़ी और सियार आदि दिखाई देते है। बन्नीटा दर कान्हा का सबसे सुंदरतम स्थल माना जाता है। इसे सनसेट पाइंट भी कहते है। शाम के समय बड़ी संख्या में पर्यटक यहाँ सूर्यास्त का मनभावन दृश्य देखने के लिए एकत्र हो जाते है।

ज्बलपुर

यह भोपाल से 329 कि.मी. की दूरी पर नर्मदा नदी के किनारे एक अनुपम पर्यटन स्थल है। यह अद्भुत नर्मदा के संगमरमरी चट्टान दृश्य के लिये प्रसिद्ध है। वर्तमान में मध्यप्रदेश का सर्वोच्च न्यायालय भी यहाँ है। तालतलैया और नयानाभिराम प्राकृतिक दृश्य जबलपुर को विरासत में मिले है। जबलपुर में कुल तालाबों की संख्या 50 से ऊपर बतलाई जाती है। आज भी हनुमान ताल जबलपुर का प्रसिद्ध क्षेत्र है।

जबलपुर के दर्शनीय स्थल

मदन महल, रानी दुर्गावती संग्रहालय, गांधी स्मारक तिलवारा घाट, सिक्ख आर्ट गैलरी ग्वारीघाट, भेड़ाघाट एवं धूंआधार प्रपात, चौसठ योगिनी मंदिर एवं सूर्यकुंड, महाकौशल शहीद स्मारक, गोपाललालजी मंदिर आदि।

उपरोक्त वर्णित विभिन्न दर्शनीय एवं रमणीय स्थलों के अतिरिक्त भी कई ऐसे स्थान है जहाँ पर्यटकों को प्रवास करने में बहुत आनन्द की अनुभूति होती है। चूंकि समस्त पर्यटन स्थलों का वर्णन किया जाना समय सीमा में संभव नहीं है। अतः कुछ प्रसिद्ध तथा चुनिंदा पर्यटन स्थलों का वर्णन किया गया है।

References

1. Emerging trends in Tourism
2. Anil Verma
3. The ICFAI University
4. Performing for Tourist: Redefining performances, performer and Audiences.
5. Shiva Rijal
6. D.K. Print World
7. Advancement in Tourism Theory & Practice Persetives from India
8. Babu P. George & Sampad Kumar
9. An Intorduction to Tourism
10. N. Jayapalan
11. Atlantic
12. The Economic Times
13. The Times of India
14. Dainik Bhaskar
15. www.tourism.gov.in
16. www.google.com
17. www.wikipedia.com
18. www.economictimes.com
19. www.tourismindia.com